UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 76-77

"विश्व में हिन्दी का स्थान"

श्रीमती ममता कोठारी
(व्याख्याता, श्री वैष्णव कालेज ऑफ टीचर्स ट्रैनिग इन्दौर)

सारांश
भारत तथा विश्व के अनेक देशों मे बोली जाने वाली सम्पर्क भाषा तथा साहित्यिक भाषा के रूप में हिन्दी प्रतिष्ठित है । विश्व के अनेकों देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा का अध्यापन एवं शिक्षण होता है । भारत की बहुसंख्यक जनता हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग करती है । संविधान के अनुच्छेद 351 में परोक्ष रूप से इसे विकसित करने का संकल्प लिया है, जिसमें हिन्दुस्तानी और अन्य भारतीय भाषाओं की बहु प्रचलित शब्दावली तथा रूप शैली को आत्मसात् करने पर बल दिया गया है । इसके साथ ही अन्य विदेशी भाषाओं के अत्यन्त प्रचलित तथा लोकप्रिय शब्दों को ग्रहण कर तथा उनको अपनी भाषा के साथ आत्मसात् करने की भी अभिप्रेरणा है ।

आज स्वतन्त्र भारत के पिछले 65 वर्षो में भी दासत्व मानसिकता की कसौटी पर खरे उतरे हम तथा राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक इच्छा शाक्ति के अभाव में भी आज हिन्दी भाषा को एक सम्पर्क भाषा के रूप में, एक साहित्यिक राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा के रूप में आशातीत सफलता प्राप्त हो चुकी है । यद्यपि आज की अंग्रेजी मानसिकता के गुलाम प्रवृति के लोग हिन्दी को हेय दृष्टि से देखते हैं तथा इसे गवारू लोगों की भाषा तथा अंग्रेजी को आभिजात्य वर्ग की भाषा के रूप में स्वीकारते हैं, किन्तु इसके बावजूद भी हिन्दी अपनी अबाध गति से तेजी के साथ अग्रसर होकर विश्व स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा कायम करने में सक्षम हुई हैं

वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में अंतर्राष्ट्रीय प्रवजन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके तहत ही अनेकों अति सामान्य आर्थिक स्थिति के दैन्य पीड़ित दूरस्थ टापुओं के खेतों–खलिहानों में काम करने के लिए गिरमिटिया बनकर ले जाये गये थे। अपनी प्रान्तीय भाषा के साथ ही साथ ये लोग हिन्दी भी साथ ले गये। पराये देश में रहकर भी संधिवीची संस्कृतियों में जी रहे हमारे भारतीय यदि अपनी परंपरा से जुड़े रह पाए तो इस नैरन्तर्य को बनाये रखने में हिन्दी भाषा एक सेतु का कार्य कर रही है। इस सेतु को सुदृढ़ करने का कार्य सूचना प्रौद्योगिकी ने किया है। 'ग्लोबल विलेज' (विश्व ग्राम) की संकल्पना के मध्य, सूचना प्रौद्योगिकी न केवल एक देश से दूसरे देश के संपर्क का सूत्र है, वरन परदेश में बड़े हो रहे बच्चों के सामाजीकरण का माध्यम भी।

मुझे लगता है कि इन प्रक्रियाओं ने हिन्दी को विश्व भाषा के रुप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विश्व की अनेकानेक लुप्त होती जा रही भाषाओं में भी हिन्दी के वर्चस्व का बढ़ना भी, इसके बढ़ते महत्व को दर्शाता है। मूलभाषा के रुप में लगभग 473 मिलियन लोग हिन्दी बोलते हैं। सत्य तो यह है कि भाषा थोपी नहीं जा सकती है। एक निश्चित सीमा तक कानून भाषा के विकास में सहायक हो सकता है। एक जीवित भाषा के रुप में करोड़ो लोगों द्वारा विभिन्न परिवेशों और संदर्भों में बोली जाने वाली हिन्दी भाषा का भविष्य उज्जवल है।

भारत के पड़ौसी देशों में सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद, हुवैगी नेपाल, श्रीलंका, भूटान, म्यांमार, बांग्लादेश एवं पाकिस्तान में हिन्दी की लोकप्रियता सामान्यतः बढ़ रही है। नेपाल में त्रिभुवन विश्वविद्यालय बांग्लादेश में ढाका विश्वविद्यालय श्रीलंका में कहणिय विश्वविद्यालय, भूटान में पाँच विद्यालयों में एवं म्यांमार में मन्दिरों, धर्मशालाओं में हिन्दी का शिक्षण सम्मान सम्पन्न हो रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका में भी हिन्दी का प्रचार–प्रसार किसी से कम नहीं है। 24 विश्वविद्यालयों के दक्षिण एशिया अध्ययन विभागों में हिन्दी प्रशिक्षण की व्यवस्था है। शिकागो केलिफोर्निया,

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 76-77

विस्कान्सिन, कोलम्बिया, पेन्सिलेवानियाँ वाशिंगटन, टेक्सास तथा वर्जिनिया के विश्वविद्यालय हिन्दी का शिक्षण निरंतर कर रहे है। नार्वे, स्वीडन, डेन्मार्क, जापान दक्षिण अफ्रीका, इटली ऑस्ट्रेलिया इत्यादि देशों में हिन्दी का शिक्षण कार्य निरंतर हो रहा है। रुस में रामचरितमानस के साथ तुलसी की लोकप्रियता है। रामचरितमानस का अनुवाद वहाँ अकादमिशियन वारान्निकोव ने किया है। सूर, कबीर, मीरा के अनुवाद हो रहे हैं, और पढ़े जा रहे हैं।

विश्वभाषा का अर्थ है – विश्व चेतस संस्कृति का वहन कर सकने वाली भाषा । हिन्दी अगर संसार में अपने योग्य स्थान को पाती है और उसका वर्तमान का स्वर अगर विश्व के चित्त को छूता है तब तो हम मानेंगे कि हिन्दी विश्व भाषा हो गई है। असल में, हिन्दी का स्वरुप जन्म से ही एक वैश्विक स्वरुप है। आज लगभग 127 देशों में भारतीय मूल के लोग रहते हैं, अप्रवासी भारतीय रहते हैं और उन 127 देशों में अधिकांश लोग हिन्दी बोल और समझ लेते हैं। दुनियाँ के लगभग 153 विश्वविद्यालयों में इस समय हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है। हिन्दी का यह जो अर्न्तराष्ट्रीय स्वरुप उभर रहा है, वह आश्चर्यजनक रुप से चकित कर देने वाला है।

उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में हम देखते हैं कि भाषा की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। विदेशों में लोग हिन्दी की सम्प्रेषणनीयता के कायल है, उच्चारण की स्पष्टता, व्याकरण की सरलता उन्हें प्रभावित करती है। भारतीय संस्कृति को समझने के लिए वे हिन्दी को पढ़ना चाहते है। तात्पर्य यह है कि भारत में हिन्दी भले ही राजनीति का शिकार होकर अपने उचित स्थान को प्राप्त नही हुई है, विदेशों में वह `उचित सम्मान प्राप्त कर रही है। हिन्दी के अधिकारों की लड़ाई लगता है, अब भारतीयों द्वारा नहीं विदेशी हिन्दी प्रेमियों द्वारा लड़ी जायेगी यह विडम्बना के साथ–साथ हिन्दी की सार्थकता सिद्ध करने वाला तथ्य भी है।

सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में हिंदी का ध्यान विश्व की भाषाओं की तुलना में तीसरा हैः भारत में राष्ट्रीय भाषा की दृष्टि से हिंदी का स्थान सर्वोपरि है और दस से अधिक देशों में विद्यमान विभिन्न समुदाय भी प्रयोग करते है। इसका साहित्य, ज्ञान, दर्शन, कविता, कला एवं विज्ञान का एक बहुत बड़ा भंडार है। निश्चित ही भविष्य में हिंदी भारत में व्यापक जन–भाषा बन सकेगी। विश्व–भाषा के रुप में भी ज्ञान एवं संस्कृति के आदान–प्रदान की दृष्टि से इसका विकास हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ल आचार्य रामचंद्र . हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1997.
2. भट्ट डॉ. राजनाथ. प्रयोजनमूलक हिन्दी ,हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला ,2004.
3. नलिन चक्रधर .विश्व हिन्दी , एच.पी.भार्गव बुक हाउस आगरा ,2008 .
4. भार्गव, महेश एंव रंजन ,राजकुमार . शैक्षिक क्षितिज पर हिन्दी के विविध आयाम एच.पी.भार्गव बुक हाउस आगरा
5. नंदिनी दुर्गेश . हिन्दी शिक्षण सुमिता इंटरप्राइजेस, दिल्ली ,2005